सन्त वही जो शान्त हो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

बाह्य और आंतरिक जगत के संतुलन से जीवन व्यवस्थित होता हैं। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। अध्यात्म प्रधान संस्कृति में संतो, मुनियों, ऋषियों और साधुओं का बहुत महत्व है। सन्त समाज का मार्गदर्शन होता है। समाज में व्यवस्था स्थापित करने के लिए और शान्ति स्थापित करने के लिए सन्तों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो सन्त होता है वह शान्त प्रकृति का होता है। आजकल लोग सन्त का वेश धारण करके असन्त का काम करते हैं। ऐसे लोग सन्त समाज को बदनाम करते हैं। सन्त वह होता है जिसमें काम, क्रोध, मद, लोभ नहीं होता जिसमें स्व और पर की भावना नहीं होती। सन्त कंचन कामिनी का त्यागी होता है। वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त होता है। सम्पूर्ण संसार ही उसका परिवार होता है। सन्त आत्मा के स्तर पर जीता है। सन्त का ह्रदय नवनीत के समान होता है। जैसे नवनीत उष्णता प्राप्त करने पर तुरन्त पिघल जाता है वैसे ही सन्तों का ह्रदय दूसरों को देखकर द्रवित हो जाता है। सुख–दुःख इन दोनों के द्वन्द्व से वह मुक्त होता है। सन्त का जीवन जल की तरह निर्मल होता है उसकी शान्त प्रकृति लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। सन्त सबके कल्याण और मंगल की कामना करता है– सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः अर्थात सभी सुखी होवें, सभी निरोग होवें और किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो यह सन्त की भावना रहती है। सन्त समाज के दुर्गुणों को दूर कर सज्जनता का संचार करते हैं। सन्त समाज के लिए मार्गदर्शन का काम करते हैं।

भारत राष्ट्र की महानता का कारण यहां का धर्म और दर्शन का संदेश है। यहां के महापुरूषों और शास्त्रों का आदेश अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह है। वेदों और उपनिषदों में सत्य अहिंसा की महिमा का गुणगान है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, श्री मदाद्यशंकराचार्य की यह धरती है। यहां के संतों ने लौकिक सुख को उतना महत्व नहीं दिया जितना आध्यात्मिकता को। अध्यात्म यहां के कण–कण में समाया हुआ है। व्रत उत्सव त्यौंहारों के माध्यम से अध्यात्म का संदेश दिया जाता है और कण–कण में आत्म तत्व का दर्शन किया जाता है। संत वही है जो शांत रहता है। संत की प्रकृति शांत होती है। उसके मन में राग, द्वेष, मद, लोभ नहीं रहता है। भारत राष्ट्र की महता संतों के कारण है। प्राचीन काल से लेकर आज तक के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम यही देखते हैं कि भारत के कण–कण में अध्यात्म समाया हुआ है। वेदों में सर्वहित की कामना की गई है। मन को शुभ संकल्पों से युक्त करने का उपदेश दिया गया है– तन्मे मनः शुभ संकल्पमस्तु।

भारत को विश्व गुरू बनाने वाले संत ही हैं। विवेकानन्द ने विश्व संसद में जब व्याख्यान दिया तो लोगों का ध्यान उनकी और आकृष्ट हुआ। उनकी वेशभूषा को देखकर जो लोग उनकी हँसी उड़ा रहे थे उनका व्याख्यान सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने भारत का नाम विश्व में रोशन किया। हर देश के नागरिक को अपने देश से प्रेम होता है। यह प्रेम स्वाभाविक है। जो व्यक्ति जिस देश में रहता है, वहां का अन्न, जल ग्रहण करता है वहां की सांस्कृतिक पहचान को अपनाता है तो प्रेम होना स्वाभाविक है। भारत एक ऐसा देश है जिसकी सांस्कृतिक पहचान हर देशों से अलग है। यहां के नागरिक इस देश को भारत माता कहकर पुकारते हैं। जैसे माता के प्रति बच्चों का स्वाभाविक आकर्षण होता है वैसे ही इस देश के नागरिकों का देश के प्रति स्वाभाविक आकर्षण है। भारत का इतिहास बहुत ही गौरवशाली है। भारत नामकरण के पीछे भी अनेक ऐतिहासिक किंबदन्तियां हैं। शकुन्तला के पुत्र भरत या भगवान् ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भी भारत पड़ा। यहां पर अनेक धर्मों और सम्प्रदायों के लोग प्रेम से जीवन–यापन करते हैं। यहां अनेकता में एकता दिखलाई पड़ती है। अनेकता में एकता की पृष्ठभूमि में संतों, सूफियों और महात्माओं का योगदान सर्वोपरि है। संत लोग पैदल भ्रमण करके पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण एकता का संदेश देते हैं। यही कारण है कि सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोग अपने–अपने मत के अनुसार जीवन–यापन करते हुए सद्भाव पूर्वक रहते हैं और भाईचारे का संदेश देते हैं।

अनेकता में एकता का संदेश संतों और महात्माओं के जीवन से मिलने वाला संदेश है। भारत प्रारम्भ से ही विभिन्नताओं का देश रहा है; किन्तु यहां की सांस्कृतिक उदात्तता के कारण इनमें एकता का ही स्वर मुखर रहा। उपनिषदों में कहा गया है कि जो दुश्चरित्र हैं, जिनका मन अशान्त और विक्षिप्त है, वे प्रज्ञान द्वारा भी आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकते हैं ऐसे लोगों को बार–बार इस भवसागर में जन्म और मरण के बन्धन में बधना पड़ता है। शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सदाचरण एवं भगवच्चरणों की पूजा तथा भक्ति पवित्र करने वाली है और सभी प्रकार के पापों का नाश करने वाली है–

चरणं पवित्रं विततं पुराणं येन पूतस्तरति दुष्कृतानि।

तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता अतिपाप्मानमराति तरेम्।।

पांच यमों और पांच नियमों में सभी प्रकार के सदाचार का अन्तर्भाव हो जाता है। संतों का उपदेश जियो और जीने दो की भावना में परिलक्षित होता है। पृथ्वी पर जितने भी प्राणी हैं सबमें आत्मदर्शन करना और सबको अपने समान मानना संतों के उपदेश का लक्ष्य है।